डान क्विज़ोट

स्पानी उपन्यास

हिन्दी अनु

अविनाश

डान क्विग्जोट

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, इसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है। भारत में लेखन-कला का सम्भवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख।

नागार्जुन कोण्डा, दूसरी सदी ई.

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

डान क्विग्जोट

स्पानी उपन्यास

सरवान्तीस

हिन्दी अनुवाद
छविनाथ पाण्डेय

साहित्य अकादेमी

DON QUIXOTE : **Hindi translation by Chhavinath Pandeya of Cervantes's Spanish novel *Don Quixote.* Sahitya Akademi, New Delhi**

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग, स्वाति, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता 700 053

सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बंगलौर 560 001

चेन्नई कार्यालय

मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304)
अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

ISBN : 81-260-2146-2

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110 032

भूमिका

मुरझाये चेहरे और लालटेन-से जबड़े वाला डान क्विग्जोट एक लस्टम-पस्टम और सींकिया व्यक्ति था, जो अपना जंग-खाया कवच धारे अपने मरियल घोड़े रोजिनाण्टे पर चढ़ा डोलता था। हमारे जीवन में वह आज भी अपने पेटू अनुचर सैंकोपांका के साथ अपना भाला ताने घोड़े पर सवार दौड़ रहा है।

'डान क्विग्जोट' में हमें अपने जीवन की सातों अवस्थाओं के लिए सन्देश प्राप्त होता है : स्कूल के दिनों में श्रोवाटाइड के कुत्ते की भांति कम्बल में लोट-पोट होते सैंकों का दृश्य देखकर हँसी के मारे हमारे पेट में बल पड़ जाते हैं, कालेज के नए विद्यार्थी के रूप में हम प्रेमाहत कार्डेनिक और हरित-नयना लुसिण्डा के आख्यान की ओर आकर्षित होते हैं, और जब हम अपनी प्रेमिका की भृकुटियों पर विषाद-भरे गीत रचने लगते हैं तो हमारा ध्यान चतुर डोरोथिया की ओर जाने लगता है। युद्धकाल में, जब हम रणभेरी के आह्वान पर गाँव-गाँव से जवानों को चल पड़ते देखते हैं तो क्या हमे उस छोकरे की याद नहीं आ जाती जो डान क्विग्जोट और सैंकों को रास्ते में जाता अकेला मिला था, जो कन्धे पर रखी तलवार के सहारे पोटली लटकाए गाता चल रहा था :

समरभूमि में जाता हूँ मैं क्योंकि नहीं है पैसा
पैसा पास अगर होता तो क्या मैं करता ऐसा

और भला कौन है जो अपने विश्वविद्यालय के जीवन में सालामान्का विश्वविद्यालय के उस विद्यार्थी सैम्सन कैराक्को की पग-पग पर याद न करता हो, जो डीलडौल में चाहे अनोखा न हो, पर जो बहुत बड़ा मसखरा था। और जब हम अधेड़ावस्था में पहुँचते हैं और अँधेरे वन में भटकने की दाँते द्वारा निर्धारित आधी अवधि पार कर चुकते हैं, तो इस अमर रचना का द्वितीय खण्ड हमें उस सर्वव्यापी दृष्टि की झलक प्रदान करता है जो हमें शेक्सपियर और मौण्टेन में मिलती है।